

---

# Shri Karapatra AshtakaM

---

## श्रीकरपात्राष्टकम्

---

### Document Information

---

Text title : KarapatrAShTakam

File name : karapAtrAShTakam.itx

Category : deities\_misc, gurudev, aShTaka

Location : doc\_deities\_misc

Author : Shri Shashidhara Sharma

Transliterated by : Megha Jogithaya

Proofread by : Megha Jogithaya

Description/comments : Praise for Karapatraswami. See scan for Hindi translation

Latest update : July 3, 2021

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

September 16, 2023

*sanskritdocuments.org*

---

श्रीकरपात्राष्टकम्



केचिद् भजन्ति विबुधा हरिमीशितार-  
ञ्चाऽन्ये हरं भवनिदाघहरं श्रयन्ति ।  
धर्माऽऽर्तिखिन्नमनसां समुपासनीयं  
प्रत्यक्षितं हरिहराद्वयमद्वयन्नः ॥ १ ॥

सद्राजनीतिनिपुणः किमु विष्णुगुप्तो  
वाचस्पतिर्निखिलशास्त्रविचक्षणो वा ।  
आहो शुको नु भगवद्गुणगानधन्यो  
यस्मिन्नितीव समशायि यतिः स वन्द्यः ॥ २ ॥

यस्याऽवसन्नवरसा रसने सरस्व-  
त्याभान्ति लेखतनवोऽतनुकीर्तिलेखाः ।  
चेतस्य भूत्सरसिजोदरसौकुमार्यं  
स्मार्यो न कस्य स वशी शयभाजनार्यः ॥ ३ ॥

वन्द्यः स योऽकृतकृती सुकृतार्थसंस्थाः  
रामायणे श्रुतिषु चाऽतत वाक्प्रवाहान् ।  
नैष्कर्म्यमूर्ध्वमधिताधिधरं तथापि  
कर्मेतराऽकृततरं व्यधिताऽऽप्रयाणम् ॥ ४ ॥

यः सत्कविर्गुरुर्बुधमङ्गलात्मा  
तीव्रप्रतापतपनश्च सतां च सोमः ।  
धर्मद्विषां शनिरथो मदिनाञ्च राहुः  
केतुः कलेर्जयति दण्डिवरः स कोऽपि ॥ ५ ॥

कारागमैः शिरसि दण्डनिपातघातै-  
रप्येजनं न जनितं किल यस्य जातु ।  
दीपः सनातनसृतेरपि गीष्पतेर्यो  
वार्येतरो हृदि विभाति स नः सदाऽऽर्यः ॥ ६ ॥

तिष्ठेत् प्रणष्टकुहकः सुपथे नरौघः

पारेऽम्बुधिं जनगिरा प्रसरं प्रयातु ।

गावश्चरन्तु परितोऽस्तभया घटोद्भ्यः

स्वप्नस्तवेति यतिराट् ! फलिता कदा नु ! ॥ ७ ॥

यो दण्डिवर्योऽतियतीन्द्रचर्यः

श्रौताऽध्वनोऽभूद्भुवनेषु धुर्यः ।

श्रेयो भृतां शश्वदपीह चार्यो

धार्यः स चित्ते करपात्र आर्यः ॥ ८ ॥

इति श्रीशशिधरशर्माविरचितं श्रीकरपात्राष्टकं सम्पूर्णम् ।


In praise of Karapatraswami. in Vedarthaparijata introduction.

Encoded and proofread by Megha Jogithaya

---

——  
*Shri Karapatra AshtakaM*

pdf was typeset on September 16, 2023

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

